



## ॥ हनुमान् चालीसा ॥

श्रीगुरु चरन सरोज रज  
निज मनु मुकुर सुधार।  
बरनऊँ रघुवर विमल यश  
जो दायकु फल चार॥

बुद्धिहीन तनु जानिके  
सुमिरौँ पवनकुमार।  
बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं  
हरहु कलेस विकार॥

### ॥ चौपाई ॥

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर।  
जय कपीश तिहुँ लोक उजागर॥ १ ॥  
राम दूत अतुलित बल धामा।  
अञ्जनिपुत्र पवनसुत नामा॥ २ ॥  
महावीर विक्रम बजरङ्गी।  
कुमति निवार सुमति के सङ्गी॥ ३ ॥  
कञ्चन बरन विराज सुवेसा।  
कानन कुण्डल कुञ्चित केशा॥ ४ ॥  
हाथ वज्र औ ध्वजा विराजै।  
काँधे मूँज जनेऊ साजै॥ ५ ॥  
सङ्कर सुवन केसरीनन्दन।  
तेज प्रताप महा जग वन्दन॥ ६ ॥  
विद्यावान गुणी अति चातुर।  
राम काज करिबे को आतुर॥ ७ ॥

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया।  
राम लखन सीता मन बसिया॥ ८ ॥  
राम लक्ष्मण जानकी।  
जय बोलो हनुमान् की॥  
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा।  
विकट रूप धरि लङ्क जरावा॥ ९ ॥  
भीम रूप धरि असुर सँहारे।  
रामचन्द्र के काज सँवारे॥ १० ॥  
लाय सजीवन लखन जियाये।  
श्रीरघुवीर हरषि उर लाये॥ ११ ॥  
रघुपति कीन्ही बहुत बडाई।  
तुम मम प्रिय भरत सम भाई॥ १२ ॥  
सहस वदन तुम्हरो यश गावैं।  
अस कहि श्रीपति कण्ठ लगावैं॥ १३ ॥  
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीशा।  
नारद शारद सहित अहीशा॥ १४ ॥  
यम कुबेर दिक्पाल जहाँ ते।  
कवि कोविद कहि सके कहाँ ते॥ १५ ॥  
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा।  
राम मिलाय राज पद दीन्हा॥ १६ ॥  
राम लक्ष्मण जानकी।  
जय बोलो हनुमान् की॥  
तुम्हरो मन्त्र विभीषण माना।  
लङ्केश्वर भये सब जग जाना॥ १७ ॥

युग सहस्र योजन पर भानू।  
 लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥ १८ ॥  
 प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं।  
 जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ॥ १९ ॥  
 दुर्गम काज जगत के जेते।  
 सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥ २० ॥  
 राम दुआरे तुम रखवारे।  
 होत न आझा बिन पैसारे ॥ २१ ॥  
 सब सुख लहै तुम्हारी सरना।  
 तुम रक्षक काहू को डर ना ॥ २२ ॥  
 आपन तेज सम्हारो आपै।  
 तीनों लोक हाँक तें काँपै ॥ २३ ॥  
 भूत पिशाच निकट नहि आवै।  
 महावीर जब नाम सुनावै ॥ २४ ॥  
 राम लक्ष्मण जानकी।  
 जय बोलो हनुमान् की ॥  
 नाशै रोग हरै सब पीरा।  
 जपत निरन्तर हनुमत वीरा ॥ २५ ॥  
 सङ्कट से हनुमान छुडावै।  
 मन क्रम वचन ध्यान जो लावै ॥ २६ ॥  
 सब पर राम तपस्वी राजा।  
 तिन के काज सकल तुम साजा ॥ २७ ॥  
 और मनोरथ जो कोई लावै।  
 दासु अमित जीवन फल पावै ॥ २८ ॥  
 चारों युग प्रताप तुम्हारा।  
 है प्रसिद्ध जगत उजियारा ॥ २९ ॥

साधु सन्त के तुम रखवारे।  
 असुर निकन्दन राम दुलारे ॥ ३० ॥  
 अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता।  
 अस बर दीन जानकी माता ॥ ३१ ॥  
 राम रसायन तुम्हरे पासा।  
 सदा रहो रघुपति के दासा ॥ ३२ ॥  
 राम लक्ष्मण जानकी।  
 जय बोलो हनुमान् की ॥  
 तुम्हरे भजन राम को पावै।  
 जन्म जन्म के दुख बिसरावै ॥ ३३ ॥  
 अन्त काल रघुपति पुर जाई।  
 जहाँ जन्मि हरिभक्त कहाई ॥ ३४ ॥  
 और देवता चित्त न धरई।  
 हनुमत सेई सर्व सुख करई ॥ ३५ ॥  
 सङ्कट कटै मिटै सब पीरा।  
 जो सुमिरै हनुमत बलवीरा ॥ ३६ ॥  
 जै जै जै हनुमान गोसाईं।  
 कृपा करहु गुरु देव की नाई ॥ ३७ ॥  
 यह शत पार पाठ कर कोई।  
 छूटहि बंदि महा सुख होई ॥ ३८ ॥  
 यो यह पढ़ै हनुमान् चलीसा।  
 होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥ ३९ ॥  
 तुलसीदास सदा हरि चेरा।  
 कीजै नाथ हृदय मैं डेरा ॥ ४० ॥  
 राम लक्ष्मण जानकी।  
 जय बोलो हनुमान् की ॥

---

This stotra can be accessed in multiple scripts at:

[http://stotrasamhita.net/wiki/Hanuman\\_Chalisa](http://stotrasamhita.net/wiki/Hanuman_Chalisa). This PDF was downloaded from <http://stotrasamhita.github.io>.

Facebook: <http://facebook.com/StotraSamhita>

GitHub: <http://stotrasamhita.github.io> | <http://github.com/stotrasamhita>

Credits: <http://stotrasamhita.net/wiki/StotraSamhita>About>